Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



# कक्षा - 9

## हिन्दी

### कृतिका (गद्य खंड)

### अध्याय-1 : इस जल प्रलय में (फणीश्वरनाथ रेणु)

भाग - 10

अभ्यास प्रश्न - I

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

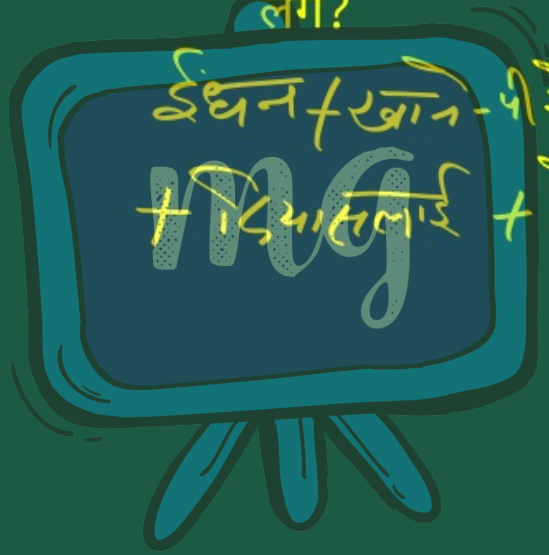

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

उत्तर : बाढ़ की खबर सुनकर लोग अपनी सुरक्षा के प्रबंध और अत्यावश्यक सामानों को जुटाने में लग गए। उन्होंने आवश्यक ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, पीने का पानी और कंपोज की गोलियाँ इकट्ठी कर लीं ताकि बाढ़ से घिर जाने पर कुछ दिनों तक गुज़ारा चल सके।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?



Under CSR Support by ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



2. बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?

उत्तर : लेखक ने बाढ़ को कई बार देखा था। उसने अनेक बार बाढ़ पीडितों की सहायता भी की थी। परंतु किसी नगर में, विशेषकर अपने नगर में पानी किस प्रकार घुसेगा यह जानना बिल्कुल नया अनुभव था। इसलिए उसे घुसते हुए पानी को देखने की बड़ी उत्सुकता थी। उसने रिक्शावाले को यही शब्द कहे थे- "चलो, पानी कैसे घुस गया है, वही देखना है।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





3. सबकी ज़बान पर एक ही जिज्ञासा- 'पानी कहाँ तक आ गया है?' - इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



**3.** सबकी ज़बान पर एक ही जिज्ञासा- 'पानी कहाँ तक आ गया है?' - इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

उत्तर : 'पानी कहाँ तक आ गया है'- यह जिज्ञासा सबके मन में थी। सब अपनी ज़बान से यही शब्द कह रहे थे। इसमें जनसमूह की उत्सुकता, सुरक्षा तथा कौतुहल की भावना प्रकट होती है। सब लोग नए अनुभव को अपनी आँखों से देखना चाहते हैं। वे जीवन-मृत्यु के खेल को देखने का मोह छोड़ नहीं पाते। इस खेल में गहरा आकर्षण होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4. 'मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?



Under CSR Support by ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



**4. 'मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?**

उत्तर : बाढ़ के लगातार बढ़ते जल को 'मृत्यु का तरल दूत' कहा गया है।

बाढ़ के इस जल ने न जाने कितने प्राणियों को उजाड़ दिया था, बहा दिया था और बेघरबार करके मौत की नींद सुला दिया था। इस तरल जल के कारण लोगों को मरना पड़ा, इसलिए इसे मृत्यु का तरल दूत कहना बिल्कुल सार्थक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5. आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



**5.** आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर : आपदाओं से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए-

☛ सरकार को सभी प्रकार के संभावित खतरों से निपटने के लिए साधन तैयार रखने चाहिए। उस सामान की लगातार देखरेख होनी चाहिए ताकि आपदा के समय उनका सदुपयोग किया जा सके।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- स्वयंसेवी संस्थाओं को बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक आपदा से निपटने के लिए आगे आना चाहिए।
- सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं के बीच गहरा तालमेल बिठाने के प्रयास होने चाहिए।
- उत्साही नवयुवकों-नवयुवतियों को शीघ्र ही किसी योजनाबद्ध कार्य में जुड़कर सहयोग करना चाहिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER






6. 'ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए... अब बूझो!'-इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

Under CSR Support by ipca | Foundation

# अभ्यास प्रश्न

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

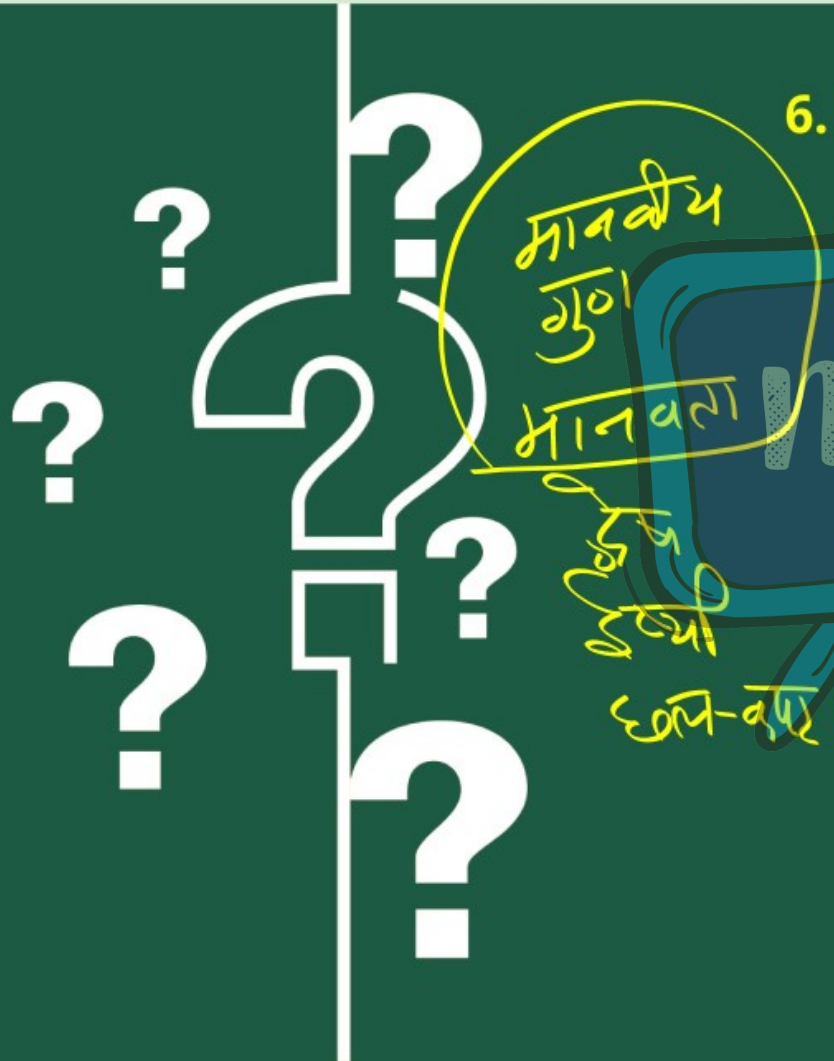

6. 'ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए... अब बूझो!'-इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

उत्तर : इस कथन द्वारा आम लोगों के मन में बैठी ईर्ष्या-द्वेष की दुर्भावना पर गहरी चोट की गई है। गाँव और शहर का अंतर सदा-से बना रहा है। अतः ग्रामीणों और नगरवासियों के मन में आपसी कटुता भी घर किए रहती है। यही कटुता उस गँवार मुस्टंडे के वचनों से प्रकट हुई है। वह मुस्टंडा चाहता है कि बाढ़ से पटनावासियों का भी बुरा हो, ताकि वे भी गाँववासियों की तरह दुखी हों।